

प्राक मा॥ महं दरम

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टमोऽध्यायः ॥

२ विविध विज्ञानाया
भाषा

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

६२ नवरात्रकाव्ये नाना प्रयोगाणि च

आर्य समाज
ARCHIVES

3027

[illegible]

१॥ जमविदं नाना नाना नाना नाना नाना ॥ इति नमो नमो नमो नमो नमो

ग्रीसनसुखे

॥

ॐ नमः

ग्रीसनसुखे

नाम

रक्षमाणनदमापदिता

द्वु ४
द्वु ४
द्वु ४
द्वु ४

१ ग्रीसनसुखे नमः ॥ धनं न विदुः यत्नं कामं न सिद्धं गं क
व ताल रुद्र द्यु कर्प्यं न का लि दा गं ॥ १ ॥ ख्याता वना ह मि
हिना नृप गं १ सुहायं न त्ना निवे व न नू चि न्न व वि क
मस्य ॥ १ ॥ मिश्रं मथीतथा नीति दुर्मकार्यं लभू
खता १ मुनीनां विद्वान् १ अस्वाभा न्न व न त्ना न्य नू क १

मातृ ॥ २ ॥ मित्रं स्वयं गतं या विदुः न यत्नं लब्धं पुत्रं नैव धनं
 कोऽपि न दितुं मादतुं यत्नं पुत्रं नैव धनं
 यत्नं स्यात्तु पुत्रं नैव धनं
 नास्ति कर्तव्यं नमः कलं नैव धनं

६२
 जीला द्यवमद्वि ता मि पन नका मातृ नी ला पुन लु
 वारका क्रि स सं गतः पतिरुव इ वी वं गु दा व न गि नि
 यो वि पुन म न्मना विकानां रजाका विलगसं लयं ॥ ३ ॥
 द्यो वि मगाद नाग वस ० प्राप्ति क वु य द्वा ॥ ३ ॥ निनी ल
 मि गु र्जा वं मि लु ल व ता उ न न नाना व मि द्म र वा ॥ ४ ॥ सि

मवागृहस्य कवि ग वृद्धं ४ पुसा दा गिनी ला वर्यवषष
मम ४ समनसा ४ निदिजस्य काम ४ कस्य इविनं ४
हा ४ मवदागीमा सुं स गमि जन ॥ ३ ॥ ४ मम ४ प्राठविचिन्ना
४ सवसतिगति ४ सवनि मरुनी या दूयं ली का सुवदी
वनमयन मया पुलं वी कलियं ४ प्रयुद्धी नगनाषो मद्

वपत्रवलेकु योजनीयो स्व कानं स्वत्मा यत्ननन्द
गल गिनसि प्रमाया विना पेरुणा य ४ डा का यु ल्य
नय ४ ४ गुलन माद मून सय ४ इष ममादाय
सम ४ ४ नानी विपवा पेय्य पुसा द द्विज ४ ४ न्य
न कल मदनयिन या इ ४ ४ यपी वष दा विदुल

मामनादद्याही तिनवेवण्य पृथिवी निद्यायनित्या पित्रा नया
आयनमा ॥ मृत्तिनयना कार्यसुत्रयायनमासि स्यात्तन्
त्रिद्विज्यच विषयस्त्वदियसिद्धिमुखा ॥ ५ ॥ द्रव्यरूपिनसंघन
सदिनः ॥ स्यात्तस्मिन्मात्रायात्रिमाणचाधपृथक्कागमसिद्धिस्तद्विदित
(॥ ५ ॥ यिच। स्यादेवच नना यनत्वय नल ॥ ५ ॥ ममिदुःखस्य हा
कुशुला तौ गुरुतादवत्सहितः तसंस्तानक ॥ ५ ॥ धर्माधर्मनव
गुणान्निमगाः सर्वचठविंशतिः ॥ ५ ॥ यथकं तु गुणान्मी कनिक

निरागद्वदामधुना नृपं स्यात्तिगमिं गायी गद्वद्वत्तमात्र
हं यत्तिष्ठामाद्वत्तकषाय गिकानकवत्तमन्त्रेष्टाग नसा ॥ ५ ॥
नयमद्विविधं ॥ नयमन्त्रेष्टाग नसा ॥ ५ ॥
दत्तपुरवत्तस्य गन्तुं (॥ ५ ॥ यत्तिष्ठामाद्वत्तकषाय गिकानकवत्तमन्त्रेष्टाग नसा ॥ ५ ॥
यात्रेष्टाग नसा ॥ ५ ॥ यत्तिष्ठामाद्वत्तकषाय गिकानकवत्तमन्त्रेष्टाग नसा ॥ ५ ॥
निरागद्वदामधुना नृपं स्यात्तिगमिं गायी गद्वद्वत्तमात्र
हं यत्तिष्ठामाद्वत्तकषाय गिकानकवत्तमन्त्रेष्टाग नसा ॥ ५ ॥
नयमद्विविधं ॥ नयमन्त्रेष्टाग नसा ॥ ५ ॥
दत्तपुरवत्तस्य गन्तुं (॥ ५ ॥ यत्तिष्ठामाद्वत्तकषाय गिकानकवत्तमन्त्रेष्टाग नसा ॥ ५ ॥
यात्रेष्टाग नसा ॥ ५ ॥ यत्तिष्ठामाद्वत्तकषाय गिकानकवत्तमन्त्रेष्टाग नसा ॥ ५ ॥

विराजते इत्यस्य दृष्टान्तस्तथादिक् दृष्ट्वा धातुः समानं भवति न य
सर्वं स्वर्गं च स्यात् त्रिकोणं इत्येवं नैव मथाथैव धनं नैव क
मयुः (अथ हि ध्यायमानो यो निषधं धेयं विषयाय तस्मिन् भागे न
निर्णयान्यादि गिद्वत्त्वमपि च स्वारादि कं दृष्ट्वा स दृष्ट्वा तस्म
धातुना विचित्रं रावस्मिन् रूपं कोणास्मात् भूमौ यि विधा
न वाच्यं न ग्यादृष्ट्वा नापि विधा राग्यं धेयं निवर्त्य न वचन
धातुः (धू न यशसं काचः यनं यसा न समया मनिः यशः धा क

[illegible]

गण्डवदरासंस्कृतानि निबृहद्वदन्यां विमात्राभा
॥ गण्डवदरासंस्कृतानि निबृहद्वदन्यां विमात्राभा

AMERICAN ARCHIVES

3027

1211 P

[illegible]

१ सव नर ग व म य गु क

उसकूय ॥ सिमाय य म्र क न ग य ल वी म्र व क स रौं उ
 न ग व ॥ अ ली न व ॥ ॐ ॥ १६६६ न न म र्ज्ञा मन शि ग य
 मान ल वि बाल लि ग य वी ॥ यामा रु यि ॥ न ती च गि ॥ क लि
 गी कू न व य यी नी च गी शि ॥ य्या क्ति थ ली क नू ली कि
 प ली चं च कू प्र क लि री ॥ यथ सि या च र म ली ॥ म्र क ठा ठा

३५॥ सिमाय को न र ॥ २

किनी मुद्रा मयी ॥ य रु व लि क ॥ श्री सै व गू नु च र ॥ ॥
 अ व ली म्र क री ॥ ली ख क य यी न च न क ॥ ली च उ म च्छि
 ले यी द वा य ॥ ध म नु या य न व ॥ ॥ १६६६ ॥
 १६६६ व क य य ॥ क क स न अ ग य ॥ म्र य स र व ल
 क नू र स्वा क ॥ अ क न क य या व ॥ थं सि य ॥ अ कि

आ १०५ ॥ वक्रयानि त्वं शक्रमनाय नित्वं सुमत्रयं
वक्रयत्रियक्रयामनु ॥ ० ॥ १०५ ॥ अलिगवन्धनी कृष्ण
माधगवन्धनी चुत्रयागिनी उयदाशंरुद्रं ॥ धात्रशक्र
क्रकाउं शगुथि शक्रपुय थं नववया शिंश्व ॥ ० ॥
१०६ निखिरवशिनी निचलनदूरुनाम शक्रं द्रुनि

उदकं दाययग ॥ धाल शलखरुयय सुगुयाय
॥ ० ॥ १०७ ॥ धात्र शक्रनरुयय सावावाय
मरुया ॥ ० ॥ १०८ ॥ धाल शमलाल धाल मायनी
यस्वाला ॥ धात्र शक्रनमरुयय सावाकामद
वया शिंश्व ॥ ० ॥ १०९ ॥ धाल शक्रनरुयय सावाकामद

दिहें लीं (गला न सिद्धि) उरु पुणें साध॥ धन १ लख
उपय उखा न शक्या रिं ग्व॥ ॐ ॥ ० ॥ ० ॥

रुं हल २ निरुल यानि यव गथा गिनी सुनु
मनु सुनु उय ले दे ला रू नि॥ साध १ कया
दे दे व वया मिरवा सा कया चिकु व वया

३१
थ न म रिं ग्व॥ ० ॥ रुं उहा नाम ला जा डं ना यो
सा सुनु मनु सुनु उय दे ला रू निं नि सुनु ना
य डं ना॥ मिरवा यि व क या म नु॥ ॐ ॥ ॥

उं का नि २ म ला का लि व क मा सु वि या वि का नी॥ क
या॥ ॥ उ वि व व सु ड म ना य सु या वि व थ या व या
वी य सु री या धि ना स य २ रु व २ सर्व उ व वि व रु व २ रु व २ रु व
का य ली मा हा रु उ स्वा ला॥ धन ३॥ म द रा॥

१३ दावम दादा न दाववा दवसाथ वाव न निन व ठु गय
 धाव न रु गय न न कुगाला दा न द व द दा र्ये म सि काय
 व डाल न न लम न न नि कि काया गय स्थ म ति कि का
 या र्म नि वि व न विल वा य द न र्म कि स न ति रू ल म
 नु न्नी ज्वल न उवाच ॥ धा व व न्ध न रि न्ध ॥
 उदि न वा का कं का द न उमा म रु ज्व न धन सु आ
 डा इ न या ला मो व सिद्धि गु न या वा धा न इ रि च्च

उ ४ रु पु र्प वि व दि न र्म न च व र्म दा स सि मा ॥ ० ॥
 आ द म र्म त्र वा लि सु म र का या व द कौ वा न न रु
 न य म को न य उ स का रू रू न य न्नी ज्व न मा दा
 द व रू न य म दा ध व कि न व द्वा दि उ प न उ थ य
 मि नि व द्वा ठ गु न कि स न र्म रू ल म नु न्नी ज्व न
 उवाच ॥ भ व न म र्वा या दा या ल र व न व ल वा व

गर्भ ॥ ० ॥ उद्युचक्रत्रयलमपुत्रमात्रज्ञानरवा
हियिशासाद्विनाय ॥ धीनद्रुद्रयुधविमस्वचिन
यकवस्यमी ॥ ० ॥ धीरुनूभाहूनकर्तुवा
सिवासिनुकदीव, धरितमाहूनसर्वापाटिया
कुसकरदिय, हानूभाहूवाभाहूमोहवाहुदि
स, उद्युभाहूहुवैवकवनदीन, यनार्कत्राख
सूर्यमीहून

धि, स्मात्कत्राधकना, गारुमहाभाहूनरुका
ममैजोयवैगपरायानि, सकत्रानात्रमायनि
सिद्धिहुद्रकयाय ॥ धीनद्रुद्रकनसजयुयसि
सागरकाववस्य ॥ ० ॥ त्यावद्रुधनयास्वानम
नकाययूष्यनकणकद्रुयावद्रुनयास्वानका

यद्युन कुरु कुरु यावद्वध प्रयौ म्यान या हा काय
 मृतन कुरु कुरु श्व भे समर्थ रा गया दा व क मिन
 बाजा वज ययि धा व रु मनु ॥ उच नुं महा प्राय ना
 पी उच नुं र वि वि र उ च नुं र उ वि ना मू कुरु र मू की
 व स मा माय स्वा हा ॥ न क द नुं कि व की द न व
 व

उरु म व सु कुरु म ॥ ० ॥ उ उ गि ज या ज कि स म न
 या जा उ उ उ न म न व सि ॥ हि कुरु यया ॥ ० ॥
 र गित् म र गि कौ व नि या या आदि स ग गि रु न म
 रु कि म्रा ज्ञा व न ने व बा पि चू यि व र वा कामू र
 द वा कि म्रा ज्ञा स ग गि रु स म नु वी ज्य व उ वा

चैमिसायावमुकाय, धमनुवाय धमैवमुधाव
 प्रातगावस्य ॥ ॥ १७ क (धायुन कड नूरव वैसे
 द्रय (धायुन कड नूरव सव रमनि (धायुन कड नूर
 ख सव ॥ ॥ १७ व नी (धायुन कड नूरव सव रमनि
 दिनुयारि ॥ ॥



ॐ श्रीकात्यायनी धनव वद धात्रि ना वद रव
 ताव वृण णि ना न २ ॥ १७ क ॥ १७ क ॥ १७ क ॥ १७ क ॥
 सिद्धिनुयाव ॥ ॥ १७ क ॥ १७ क ॥ १७ क ॥ १७ क ॥